अमृत कलश टाइम्स

http://amritkalashtimes.com

वर्ष : 18
अंक : 162

प्रयागराज गुरुवार 27 फरवरी 2025

पृष्ठः- 4, मूल्यः- एक रूपया

महाकुंभ में जितने श्रद्धालु पहुंचे, उतनी 193 देशों की आबादी नहीं

अब तक महाकुंभ में 64 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आ चुके हैं। **आखिरी स्नान महाशिवरात्रि तक यह संख्या 66 करोड़ से ज्यादा पहुंचने की उम्मीद है।** महाकुंभ शुरू होने से पहले सरकार की तरफ से 40 करोड़ लोगों के आने की संभावना जताई गई थी।

2011 की जनगणना के मुताबिक देश की आबादी 1 अरब 21 करोड़ से ज्यादा थी। तब से जनगणना नहीं हुई। उसके हिसाब से देखें तो देश की आधी जनसंख्या इस महाकुंभ में स्नान कर चुकी है।

यह दुनिया का पहला और अकेला ऐसा आयोजन है, जहां इतनी संख्या में श्रद्धालु हिस्सा बने। **अब तक जितने लोग पहुंचे हैं, उतनी दुनिया के 193 देशों की जनसंख्या नहीं है।** सिर्फ भारत और चीन की आबादी इससे ज्यादा है।

अकेले सिर्फ 29 जनवरी को मौनी अमावस्या के दिन ही लगभग 7.6 करोड़ श्रद्धालुओं ने महाकुंभ में डुबकी लगाई थी। प्रयागराज में इस दिन जितनी आबादी थी, उतनी 179 देशों की जनसंख्या नहीं है। यूनाइटेड नेशंस से कुल 195 देशों की मान्यता है।

मकर संक्रांति पर भी 4.20 करोड़ लोगों के साथ प्रयागराज विश्व का सबसे बड़ा जिला बनने का रिकॉर्ड बनाया था। विश्व में सिर्फ जापान का टोक्यो शहर है, जिसकी आबादी 3.74 करोड़ है।

महाकुंभ में बने महारिकॉर्ड

हर-हर महादेव से गूंजे शिवालय

- **काशी में 10 हजार नागा गदा-तलवार लहराते निकले: बाबा विश्वनाथ का दूल्हे जैसा श्रृंगार, भक्तों पर हेलिकॉप्टर से फूल बरसाए**
- **शिव मंदिर में उमड़ा आस्था का सैलाब**

प्रयागराज,(एजेंसी)। तीर्थराज प्रयागराज में महाशिवरात्रि पर्व पर शिवालयों पर आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ा। भोर से ही भक्तों की कतार लग गई और हर–हर महादेव के जयकारों की गूंज रही। फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है। यह शिव शंकर की पूजा–अर्चना के लिए समर्पित है। श्रद्धालु प्रातरूकाल से ही स्नान कर अपने हाथ में पान, फूल, विल्वपत्र, धतूरा, मदार, दूर्वा आदि लेकर कतार में अपना नम्बर आने के इंतजार में ऊं नम शिवाय का निरंतर जप किए जा रहे हैं। मंदिरों में लंम्बी कतार लगी है। मंदिरों में घंट, घडियाल और शंख की ध्वनि वातावरण को आध्यात्मिकता से लबरेज कर रही है। तमाम शिव मंदिरों में महादेव का अभिषेक कराया जा रहा है। प्रयागराज में यमुना तट पर स्थित मनकामेश्वर मंदिर के बारे में बताया जाता है कि यह करीब 200 वर्ष प्राचीन और महत्वपूर्ण शिव मंदिरों में से एक है, जो शहर के मध्य स्थित है। मंदिर के बारे में मान्यता है कि यहां की पूजा से व्यक्ति की सभी इच्छाएं पूरी होती हैं। इस मंदिर का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व भी है। यह मंदिर कामेश्वर और कामेश्वरी का तीर्थ है। इस मंदिर में ऋण मुक्तेश्वर और सिद्धेश्वर महादेव का शिवलिंग भी है। इस मंदिर का पुराणों में भी उल्लेख मिलता है। यहां दूर दराज से शिवभक्त जलाधिभेक करने आते हैं। यह मंदिर नैनी ब्रिज के पास स्थित है। प्रयागराज के घूरपुर थाना क्षेत्र के देवरिया गांव में यमुना नदी के किनारे सुजावन देव मंदिर है. यह मंदिर भगवान शिव और माता यमुना को समर्पित है। यह मंदिर विशेष रूप से उस स्थान पर स्थित है जहां स्थानीय लोग पूजा करते हैं। मंदिर में नियमित रूप से विशेष पूजा और अनुष्ठान होते हैं। यह मंदिर भक्तों के लिए शांति और आशीर्वाद का स्थान है, जहां वे भगवान शिव की उपासना करके अपने जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति पाते हैं। प्रशासन ने सुरक्षा का विशेष प्रबंध किया है। यहां महिलाओं के लिए मंदिर में दर्शन पूजन के लिए अलग और अलग लाइन की व्यवस्था किया है। महाकुंभ का अंतिम स्नान पर्व होने के कारण भी दूर दराज से आने वाले श्रद्धालु संगम में पुण्य की डुबकी लगाने के बाद मंदिरों में मत्था टेक रहे हैं। शहर के सभी मंदिरों में लंबी लंबी कतारें लगी हैं। श्रद्धालु कतार में निरंतर ऊं नमरू शिवाय मंत्र का जप कर रहे हैं। सोमेश्वर महादेव का मंदिर संगम नगरी प्रयागराज में भगवान शिव का एक ऐसा अनूठा मंदिर है, जहां लोग गंभीर बीमारियों से निजात पाने के लिए आते हैं। मान्यता है कि इस अनूठे मंदिर की स्थापना खुद चंद्रदेव ने तब की थी, जब उन्हें श्राप की वजह से कुष्ठरोग हो गया था। पौराणिक कथाओं के मुताबिक कुष्ठ रोग होने के बाद चन्द्रमा ने इसी जगह शिवलिंग स्थापित कर अपनी बीमारी से मुक्ति पाई थी।

चंद्रदेव द्वारा स्थापित किये जाने और यहीं उनका कुष्ठरोग ठीक होने की वजह से बड़ी संख्या में श्रद्धालु निरोगी होने की कामना के साथ यहां दर्शन पूजन के लिए आते हैं। यहां शिव भक्त बड़ी श्रद्धा से पूजा करते हैं और इस मंदिर का विशेष महत्व महाशिवरात्रि के दिन होता है। इस मंदिर में भक्तों की आस्था के साथ–साथ भगवान शिव की पूजा भी पूरे धूमधाम से होती है। बारा शिव मंदिर प्रयागराज के प्रमुख शिव मंदिरों में से एक है, जो त्रिवेणी संगम के पास स्थित है। इस मंदिर में महाशिवरात्रि पर विशेष पूजा होती है और यहां भक्तों की भारी भीड़ लगती है। इस मंदिर का इतिहास भी बहुत पुराना है और यहां भगवान शिव का अद्भुत रूप पूजा जाता है। पूरी दुनिया में तमाम शिव मंदिरों की अपनी अलग अलग मान्यताएं हैं। इसी प्रकार जिले में एक ऐसा भी शिव मंदिर है।

महाकुंभ

मौनी अमावस्या पर रिकॉर्ड 7.64 करोड़ श्रद्धालु आए

13 जनवरी (पौष पूर्णिमा)	एक दिन में **1.70 करोड़**
14 जनवरी (मकर संक्रांति)	एक दिन में **3.50 करोड़**
29 जनवरी (मौनी अमावस्या)	एक दिन में **7.64 करोड़**
03 फरवरी (बसंत पंचमी)	एक दिन में **2.57 करोड़**
12 फरवरी (माघ पूर्णिमा)	एक दिन में **2 करोड़**
26 फरवरी (महाशिवरात्रि)	**3 करोड़** का अनुमान

कैग रिपोर्ट सार्वजनिक हो, पीएसी करे इसकी जांच: कांग्रेस

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। कांग्रेस ने दिल्ली की आबकारी नीति पर नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की रिपोर्ट विधानसभा की पटल पर पेश करने का स्वागत किया है, लेकिन कहा है कि इसे सार्वजनिक कर लोक लेखा समिति (पीएसी) से इसकी जांच कराई जानी चाहिए। कांग्रेस के अध्यक्ष देवेंद्र यादव तथा वरिष्ठ नेता संदीप दीक्षित ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार ने कैग की 14 में से एक रिपोर्ट ही विधानसभा के पटल पर रखी है और इससे साफ है की शराब नीति घोटाले में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शामिल है। इसलिए रिपोर्ट को सार्वजनिक कर इस घोटाले को सबके सामने लाया जाना चाहिए। उन्होंने आबकारी घोटाले की व्यापक जांच कराने की मांग करते हुए कहा, "कांग्रेस को पहले से संदेह था कि इस नीति में बहुत सारी अनियमितताएं हैं जिससे सरकार के राजस्व पर असर पड़ने वाला है। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस ने जांच एजेंसियों को शराब नीति से जुड़ी लिखित शिकायत भी की थी, जिसमें भाजपा के संलिप्त होने के भी सबूत थे। ऐसे में सवाल है कि विधानसभा में आबकारी नीति से जुड़ी सभी 14 रिपोर्ट्स पेश क्यों नहीं की गई। इस रिपोर्ट की पीएसी से जांच हो। इस पर जल्द से जल्द पीएसी बनाई जाए ताकि इस रिपोर्ट की जांच हो सके और जो भी लोग लूट में शामिल थे, उन्हें सजा मिले।" कांग्रेस नेताओं ने मांग करते हुए कहा, "हमारी मांग है कि इन रिपोर्ट्स को सार्वजनिक तौर पर चर्चा में लाया जाना चाहिए। भाजपा के कुछ बड़े नेता और तत्कालीन उप–राज्यपाल की भूमिका से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण सवाल हैं।

महामहिम ने 251 जोड़ों को दिया आशीर्वाद

- **महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करना चाहिएः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू**

छतरपुर,(एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू छतरपुर के बागेश्वर धाम में 251 जोड़ों के सामूहिक विवाह समारोह में शामिल होने पहुंचीं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री मोहन यादव, राज्यपाल मंगूभाई पटेल, पं. धीरेंद्र शास्त्री, सोनू निगम, क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग, रॉबिन उथप्पा सहित कई गणमान्य लोग शामिल हुए। मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध बागेश्वर धाम में बुधवार को भव्य सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें 251 जोड़ों ने विवाह सूत्र में बंधकर अपने नए जीवन की शुरुआत की। इस कार्यक्रम में देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद दिया। समारोह में मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी मौजूद रहे। राष्ट्रपति क्या बोलीं? राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सफलता ही समाज और देश की सफलता की गारंटी है। इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारतीय संत परंपरा की सराहना की।

उन्होंने कहा, श्भारतीय परंपरा में संतों ने सदियों अपने कर्म और वाणी से जन मानस को राह दिखाई है। सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई है। अंधविश्वास के बारे में लोगों को जागरूक किया है। चाहे गुरुनानक हों, रविदास हों या संत कबीर दास हों, मीराबाई हों या संत तुकाराम, सभी ने समाज को सही राह दिखाई है।श सीएम बोले– 251 घोड़े कहां से लाए, गजब कर दिया सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा, आज बागेश्वर धाम नया कीर्तिमान बना रहा है। आपने जातिगत संघर्ष को तोड़ने का काम किया है। ये हमारे लिए सौभाग्य की बात है। 251 घोड़े कहां–कहां से लाए महाराज गजब कर दिया आपने। आज आपने अश्वमेघ के घोड़े के समान दिग्विजय घोड़े के समान ये घोड़े लाए हैं, जिन्होंने समाज की असमानता को तोड़ दिया। शासन, सत्ता और संत की त्रिवेणी की मौजूदगी में ये विवाह का काम किया। जातियों की दीवारें टूटें और सद्भावना बने ये काम किया है। हमने अपनी बहन का विवाह जैसे–तैसे किया थारू धीरेंद्र शास्त्री पं. धीरेंद्र शास्त्री ने कहा, जिस दिन हमने अपनी बहन का विवाह जैसे–तैसे लोगों से उधार लेकर किया, उसी दिन ठान लिया था। भगवान ने हमें सामर्थ्यवान बनाया तो भारत में बेटियों के विवाह के लिए किसी को निराश नहीं होना पड़ेगा। आज बेटियों की विदाई है तो हम भावुक हैं।

ज्यादा बोल नहीं पाते हैं। उन्होंने आगे कहा कि देश में कोई छोटा–बड़ा नहीं है। सभी बराबर हैं। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए यह उत्सव हर वर्ष किया जाता है। मंदिरों की दानपेटियों को बेटियों की शादियों के लिए खोल दिया जाएगा ।

महाकुंभ में व्यवस्थाओं की मॉनिटरिंग के लिए डटे रहे सीएम योगी

लखनऊ,(एजेंसी)। महाकुंभ 2025 के महाशिवरात्रि पर महाकुंभ के अंतिम स्नान के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सुबह चार बजे से ही व्यवस्थाओं की मॉनिटरिंग करते रहे और अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ महाकुम्भ के अंतिम स्नान पर्व महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर भी सुबह से ही एक्टिव नजर आए। बीते सभी अमृत स्नान और स्नान पर्व की तरह मुख्यमंत्री जी सुबह तड़के 4 बजे से ही व्यवस्थाओं को देखने के लिए कंट्रोल रूम पहुंच गए। गोरखपुर प्रवास के चलते उनके लिए गोरखनाथ मंदिर में ही कंट्रोल रूम स्थापित किया गया, जहां वह स्नान पर्व पर पल–पल की मॉनीटरिंग करते नजर आए।

टीवी पर उन्होंने श्रद्धालुओं के स्नान की एक–एक फीड को लाइव देखा और कंट्रोल रूम से ही आला अधिकारियों को निर्देशित किया। सीएम योगी के निर्देश पर समस्त आला अधिकारी भी मुस्तैद नजर आए और सुबह से ही उन्होंने भी मोर्चा संभाल लिया। इससे पूर्व सीएम योगी ने बसंत पंचमी और माघ पूर्णिमा अमृत स्नान के अवसर पर भी प्रातः से वॉर रूम में अधिकारियों के साथ बैठक की थी और मॉनिटरिंग करते रहे थे। कंट्रोल रूम में मुख्यमंत्री की सक्रिय निगरानी महाशिवरात्रि अमृत स्नान के साथ ही बुधवार को महाकुम्भ 2025 का समापन होना है। ऐसे में मुख्यमंत्री ने महाशिवरात्रि स्नान पर्व के इस महत्वपूर्ण आयोजन की सुरक्षा और व्यवस्था के संदर्भ में पूरी स्थिति का जायजा लिया। गोरखपुर में वह सुबह से ही गोरखनाथ मंदिर स्थित कंट्रोल रूम में पहुंच गए और टीवी पर स्नान पर्व की लाइव फीड पर मॉनीटरिंग करते रहे।

सैम्पल जांच में देरी

यौन अपराध के बढ़ते मामले सभ्य समाज के लिए सदैव चिंता का विषय रहे हैं। इससे भी बड़ी चिंता यह कि बलात्कार और पॉक्सो के संदिग्ध मामलों में सिस्टम की खामी के चलते पीडिघ्त पक्ष को लंबे समय तक न्याय नहीं मिल पाता है। सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है कि न्याय में यह देरी पीडिघ्त पक्ष को कितना मानसिक आघात पहुंचाने वाली होगी? यह तो तब है जब सरकार ने बलात्कार और पॉक्सो के मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए अलग से कोर्ट की व्यवस्था की है। इस तरह की अदालतें कायम करने का मकसद भी यही था कि अपराधियों को जल्द सजा मिल सके।चिंता की बात यह है कि बच्चों व महिलाओं से जुड़े अपराधों को लेकर सजगता कई मामलों में बिल्कुल ही नजर नहीं आ रही। बलात्कार और पॉक्सो के कई मामलों में न्याय मिलने में देरी का मुख्य कारण डीएनए जांच में हो रहा विलम्ब है। कहने को तो राजस्थान में पीडिघ्तों के सैंपल्स के लिए विधि विज्ञान विभाग की सात प्रयोगशालाओं में जांच की व्यवस्था है, लेकिन इनमें से तीन में ही डीएनए सैम्पल की जांच हो रही है जबकि सर्वविदित तथ्य है कि कई बार अपराधी डीएनए सैम्पल की वजह से ही जेल पहुंच पाते हैं। पिछले पांच साल में केवल चार हजार सैंपल्स की ही जांच की जा सकी है, जबकि करीब 15 हजार सैंपल्स की जांच होना बाकी है।

न्यायिक प्रक्रिया में इस तरह के सैम्पल की जांच रिपोर्ट के बिना केस की सुनवाई आगे नहीं बढ़ सकती। हैरत की बात यह है कि व्यवस्थाओं में सुधार के नाम पर पिछले पांच साल में 40 करोड़ रुपए खर्च होने के बावजूद न तो सैम्पल जांच के लिए पर्याप्त स्टाफ लग पाया है और न ही जांच की प्रक्रिया में तेजी लाई जा सकती है। हालत यह है कि हर माह प्रदेश में बलात्कार और पॉक्सो के करीब 700 मामले दर्ज हो रहे हैं, लेकिन जहां सैम्पल की जांच होनी होती है वहां परेशानियां कम नहीं।जब तक डीएनए जांच की प्रक्रिया को रफ्तार नहीं दी जाती तब तक ऐसे मामलों के त्वरित निस्तारण की उम्मीद करना कठिन है। जरूरत इस बात की है कि राजस्थान में डीएनए जांच के लिए बंद पड़ी प्रयोगशालाओं को तो शुरू किया ही जाए, नई प्रयोगशालाएं भी कायम की जानी चाहिए। जांच में आधुनिक तकनीक का उपयोग कर समूची प्रक्रिया को पारदर्शी और समयबद्ध बनाए जाने की भी जरूरत है।

ईवीएम पर कांग्रेस को पंक्चर करने का प्रयास

अजीत द्विवेदी

संसद का शीतकालीन सत्र कई मायने में बहुत दिलचस्प राजनीतिक घटनाक्रम वाला रहा है। इस सत्र में जो विधायी कामकाज हुए या दोनों सदनों में संविधान पर जो चर्चा हुई वह अपनी जगह है लेकिन जो राजनीति हुई वह ज्यादा दिलचस्प रही। यह पहली बार हुआ कि पूरे सत्र में कांग्रेस सत्ता पक्ष के साथ साथ विपक्ष की पार्टियों के निशाने पर भी रही। कांग्रेस को अलग थलग करने का प्रयास भाजपा की ओर से हो रहा था तो साथ साथ विपक्षी गठबंधन की पार्टियों की ओर से भी हो रहा था।यह प्रयास इतना व्यवस्थित था कि शुरू में तो कांग्रेस भी नहीं भांप सकी कि जो हो रहा है वह एक डिजाइन के तहत हो रहा है।लेकिन फिर कांग्रेस को समझ में आया लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। एक महीने के सत्र में वह अपना एक भी एजेंडा सदन में ठीक से नहीं उठा सकी। सरकार से ज्यादा विपक्ष की पार्टियों ने कांग्रेस के एजेंडे को पंक्चर किया।कांग्रेस का इस सत्र में सबसे बड़ा एजेंडा अडानी का था। सत्र से ठीक पहले अमेरिकी अदालत में गौतम अडानी और सागर अडानी सहित आठ लोगों के खिलाफ फ्रॉड और घूसखोरी के आरोप लगे थे और वारंट जारी होने की खबर आई थी।

इस लिहाज से यह विपक्ष के लिए बड़ा मौका था कि वह केंद्र सरकार को क्रोनी कैपिटलिज्म पर घेरे। कांग्रेस ने यही किया। उसने संसद ठप्प किया और संसद परिसर में प्रदर्शन भी किया।लेकिन दो दिन के बाद ही ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने अपने को कांग्रेस के प्रदर्शन से अलग कर लिया।इतना ही नहीं तृणमूल कांग्रेस ने यह भी कह दिया कि वह अडानी के मसले पर संसद ठप्प करने के समर्थन में नहीं है। वह चाहती है कि दूसरे मुद्दों पर संसद में चर्चा हो।हालांकि ऐसा नहीं है कि अडानी के अलावा दूसरे मुद्दे नहीं उठाए जा रहे थे। लेकिन तृणमूल कांग्रेस ने अपने राज्य के स्थानीय मुद्दे और मणिपुर का मुद्दा उठाने के नाम पर अपने को कांग्रेस से दूर किया।

तृणमूल के यह स्टैंड लेने के करीब एक हफ्ते बाद समाजवादी पार्टी ने भी यही स्टैंड ले लिया। सपा ने भी कह दिया कि वह अडानी के मसले पर कांग्रेस के साथ नहीं है। उसके लिए संभल की शाही मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा का मुद्दा ज्यादा बड़ा था।जिस समय तृणमूल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने अडानी मसले पर कांग्रेस को अलग थलग करने का अपना दांव चला उसी समय लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अपनी जिद में कहा कि कांग्रेस अडानी का मुद्दा नहीं छोडने जा रही है।उनको पता था कि यह मुद्दा सरकार को और भाजपा को सबसे ज्यादा तकलीफ दे रहा है। तभी उन्होंने साफ कर दिया कि संसद के शीतकालीन सत्र में कांग्रेस यह मुद्दा उठाती रहेगी।उस समय तक संभवतरू उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि इस मुद्दे की हवा निकालने के लिए तृणमूल कांग्रेस किस हद तक जाएगी।

तृणमूल कांग्रेस का अगला कदम था, सीधे कांग्रेस के नेतृत्व को चुनौती देना और विपक्षी गठबंधन में उसकी ऑथोरिटी को कमजोर करना। इसके लिए सीधे ममता बनर्जी मैदान में उतरीं।पहले कल्याण बनर्जी या काकोली घोष दस्तीदार या दूसरे नेताओं के जरिए बयानबाजी हो रही थी लेकिन कांग्रेस नेतृत्व को चुनौती देने की बात आई तो खुद ममता बनर्जी ने कहा कि उन्होंने इंडियाय ब्लॉक का गठन किया था मौका मिले तो वे इसका नेतृत्व करना चाहेंगी।इसके बाद तो पंडोरा बॉक्स खुल गया। ऐसा लगा, जैसे पार्टियां कांग्रेस से भरी बैठी हैं। एक के बाद एक नेताओं ने कांग्रेस से नेतृत्व छीन कर ममता बनर्जी को देने की मांग शुरू कर दी।संजय राउत से लेकर शरद पवार और रामगोपाल यादव से लेकर लालू यादव तक सब ममता की जयकार करने लगे।

रामगोपाल यादव ने कहा कि राहुल विपक्षी गठबंधन के नेता नहीं हैं तो लालू यादव ने कहा कि कांग्रेस के विरोध की परवाह किए बगैर ममता को नेता बनाना चाहिए।इसके बाद मीडिया में कथित राजनीतिक विश्लेषकों द्वारा बताया जाने लगा कि ममता बनर्जी को विपक्ष का नेता बनाने के क्या क्या फायदे इंडियाय ब्लॉक को मिल सकते हैं।जब राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी पर इससे भी फर्क नहीं पड़ा और वे अडानी का मुद्दा उठाते रहे तब ईवीएम के मुद्दे पर कांग्रेस को पंक्चर करने का प्रयास शुरू हुआ।नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता और जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि कांग्रेस ईवीएम का रोना बंद करे।उन्होंने कहा कि कांग्रेस जब चुनाव जीत जाती है तो जश्न मनाती है और हारने पर ईवीएम को दोष देती है।

इसके तुरंत बाद ईडी और सीबीआई की जांच में फंसे ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी ने कांग्रेस के ईवीएम विरोध को खारिज करते हुए कहा कि कांग्रेस सबूत पेश करे कि कैसे ईवीएम हैक किया जाता है।अडानी के बाद ईवीएम दूसरा मुद्दा था, जिस पर कांग्रेस ने केंद्र सरकार के विरोध का पूरा नैरेटिव बनाया था। लेकिन भाजपा के साथ साथ विपक्ष की पार्टियों ने ही इन दोनों मुद्दों को पंक्चर करने का प्रयास किया।सवाल है कि विपक्षी पार्टियों ने कांग्रेस को अलग थलग करने का यह जो प्रयास संसद सत्र में किया उससे कांग्रेस कमजोर हुई, बैकफुट पर गई, अलग थलग हुई या विपक्ष की चुनिंदा पार्टियों की पोल खुली?क्या इससे ममता बनर्जी और अखिलेश यादव ज्यादा एक्सपोज नहीं हुए हैं? क्या इन दोनों को अंदाजा है कि इनको लेकर क्या नैरेटिव बन रहा है?

सहज रूप से यह धारणा बनी है कि देश के सबसे अमीर कारोबारी गौतम अडानी ने चाहे जिस तरह से हो इन दोनों नेताओं को अपना बना लिया है।यह भी कहा और माना जा रहा है कि विपक्ष की ज्यादातर पार्टियां अडानी मसले पर राहुल के अभियान से इसलिए असहज हैं क्योंकि उनको किसी न किसी तरह का लालच है या भय है।किसको लालच है और किसको भय है, यह अलग चर्चा का विषय है लेकिन हकीकत है कि कांग्रेस को अलग थलग करने के चक्कर में ममता बनर्जी और अखिलेश यादव के साथ साथ विपक्ष की कई पार्टियों ने अपने को एक्सपोज कर लिया है।असल में इन पार्टियों ने एक तीर से दो शिकार करने का प्रयास किया। उनको लगा कि कांग्रेस के एजेंडे को पंक्चर करेंगे तो सरदार खुश होगा, शाबाशी देगा और दूसरे, कांग्रेस को भी अलग थलग कर देंगे तो विपक्षी गठबंधन के नेतृत्व की राह निष्कंटक बनेगी।साथ ही वोट की राजनीति में भी कांग्रेस की ओर से पैदा की जा रही चुनौती खत्म होगी। पता नहीं यह लक्ष्य कितना पूरा हुआ लेकिन यह जरूर हुआ कि इन नेताओं ने अपनी जो छवि लडने वाले और क्रांतिकारी नेता की बनाई थी वह अब पूंजी के सामने झुकने और सत्ता की ताकत से दबने वाले नेता की हो गई है।कहने को ये पार्टियां अब भी केंद्र सरकार और भाजपा के खिलाफ बयानबाजी करेंगी लेकिन उनका कोई खास मतलब नहीं होगा। उसे नूरा कुश्ती ही माना जाएगा।

सरकारी आंकड़े ही संदिग्ध

पिकेटी का सुझाव है कि भारत को जीडीपी–टैक्स अनुपात में सुधार कर अतिरिक्त संसाधन इकत्रा करना चाहिए। उसका निवेश मुफ्त स्कूली शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर को सशक्त करने में किया जाना चाहिए। यही विकसित देश बनने का रास्ता है।बढ़ती आर्थिक गैर–बराबरी पर राजधानी में एक गंभीर चर्चा हुई। इसमें दो नजरिए उभर कर सामने आए। एक नजरिये की नुमानंदगी भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी. अनंत नागेश्वरन ने की।उन्होंने कहा कि न्यायपूर्ण आर्थिक विकास को मापने का पैमाना आमदनी की गैर–बराबरी कम करना नहीं, बल्कि गरीबी घटाना है।

उन्होंने दावा किया कि पूंजी पर टैक्स लगाने से निवेश नहीं बढ़ेगा, बल्कि पूंजी का पलायन शुरू हो जाएगा। उनका यह दावा भी दिलचस्प है कि समानता थोपने से सूक्ष्म एवं लघु व्यापार को अधिक क्षति पहुंचती है।ऐसी कोशिश को नागेश्वरन ने सीमा लगाने का अत्याचार बताया और कहा कि ऐसा करने पर छोटे कारोबारी छोटे ही रह जाएंगे।शैर–बराबरी, आर्थिक वृद्धि एवं समावेशन्य विषय पर हुई इस चर्चा में दूसरा पक्ष विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी रख चुके थे।पिकेटी ने अपनी चिर–परिचित राय रखी कि भारत को जरूरत जीडीपी–टैक्स अनुपात को सुधारने की है।उनका सुझाव है कि भारत को सबसे धनी एक फीसदी लोगों पर दो फीसदी धन कर लगाना चाहिए जाए और आय कर व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाना चाहिए।इससे इकत्रा अतिरिक्त संसाधनों का निवेश मुफ्त स्कूली शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर को सशक्त करने में किया जाना चाहिए।यही विकसित देश बनने का रास्ता है। मगर नागेश्वरन की बात से साफ है कि भारत सरकार इस नजरिए से बिल्कुल सहमत नहीं है।बहरहाल, चूंकि उन्होंने न्यायपूर्ण विकास को मापने का पैमाना गरीबों की संख्या में गिरावट को बताया, तो यह मुद्दा उठेगा कि आखिर गरीबी को मापने की कसौटी क्या हो?भारत सरकार ने सामान्यतरू मान्य कसौटियों को ताक पर रखते हुए जो पैमाना अपनाया है, उसे इस क्षेत्र के विशेषज्ञ स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।सबसे पहले तो सरकारी आंकड़े ही संदिग्ध होते गए हैं। उसे ठीक करने की जरूरत है। फिर बेहतर होगा, सरकार प्रति दिन प्रति व्यक्ति कैलोरी की उपलब्धता के पुराने पैमाने को आधार बनाए। उस पर देखा जाए, तो असल में गरीबों की संख्या बढ़ी है।फिर भी क्या नागेश्वरन कहने की स्थिति में हैं कि जिस सरकार के वे सलाहकार हैं, उसकी नीतियों से गरीबी में ह्रास हुआ है?

क्या नारियल पानी से ठीक हो जाता है हैंगओवर?

नारियल पानी को अक्सर हैंगओवर का इलाज बताया जाता है। लोग मानते हैं कि यह शरीर को हाइड्रेट करता है और हैंगओवर के लक्षणों को कम करता है।नारियल पानी में पोटैशियम और मैग्नीशियम जैसे इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं, जो शरीर को ऊर्जा देने में मदद करते हैं। हालांकि, यह जानना जरूरी है कि केवल नारियल पानी पीने से इस समस्या का समाधान होता है या नहीं।आइए इस लेख के जरिए इस मिथक की सच्चाई जानते हैं।

नारियल पानी में इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं, जो शरीर को हाइड्रेट करने में मदद करते हैं। यह शरीर में तरल पदार्थ की कमी को पूरा करता है, जिससे आप ताजगी महसूस कर सकते हैं।हालांकि, सिर्फ हाइड्रेशन ही हैंगओवर का इलाज नहीं कर सकता। शराब पीने से सिरदर्द, मतली और कमजोरी जैसी समस्याएं होती हैं।इसलिए, केवल नारियल पानी पीने से सभी समस्याओं का समाधान नहीं होता और आपको अन्य उपाय भी अपनाने चाहिए।शराब पीने के बाद शरीर में कई पोषक तत्वों की कमी हो जाती है, जिससे कमजोरी और थकान महसूस होती है। नारियल पानी में कुछ विटामिन और मिनरल होते हैं, जो शरीर को थोड़ी राहत दे सकते हैं।हालांकि, यह सभी जरूरी पोषक तत्वों की पूर्ति नहीं कर सकता। इसलिए, संतुलित डाइट लेना भी जरूरी होता है, ताकि शरीर को सभी आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें और आप जल्दी ठीक हो सकें।वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि नारियल पानी से हैंगओवर के दौरान थोड़ी राहत मिल सकती है, लेकिन इसे एकमात्र उपाय मानना गलत होगा।बेहतर होगा कि आप पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं, पौष्टिक खाना खाएं और आराम करें, ताकि आपका शरीर जल्दी ठीक हो सके।

फलों का स्वाद नमकीन क्यों नहीं

फल हर कोई खाता है. किसी को खट्टे–मीठे यूं ही खाना पसंद होता है तो कोई उनके ऊपर स्वाद बढ़ाने के लिए नमक या मसाला डालकर खाते हैं. लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि फलो का स्वाद मीठा या खट्टा तो होता है लेकिन कभी नमकीन क्यों नहीं होता? या आप जो फलों पर नमक या मसाला डालकर खाते हैं तो इससे आपकी सेहत को कोई नुकसान तो नहीं होता, अगर नहीं तो ये खबर आपके लिए है. आइए जानते हैं इसके बारे में विस्तार से.

फल नमकीन क्यों नहीं होते?

आमतौर पर कोई भी फल नमकीन नहीं होता है. इसमें नमक की मात्रा पैदा करने वाले नेचुरल सिस्टम की कमी होती है. पौधे शुगर और एसिड को नेचर के जरिए अपने सिस्टम से प्रोसेस कर सकते हैं लेकिन नमक यानि सोडियम क्लोराइड नहीं. आमतौर मिट्टी से पौधों में कुछ नमक जरूर आता है लेकिन बहुत सीमित मात्रा में. अगर ये ज्यादा हो जाए तो पौधे की ग्रोथ और बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया पर असर डाल सकते हैं.

दुनिया का एकमात्र खट्टा फल

अपवाद के तौर पर कुछ फलों में नमक की थोड़ी मात्रा हो सकती है, लेकिन इसके बाद भी उनमें नमकीन स्वाद नहीं होता. कई फल ऐसे होते हैं जिसमें बहुत कम मात्रा में सोडियम होता है. हालांकि दुनिया का एक फल ऐसा है जो नमकीन होता है, इसे पिगफेस फ्रूट कहते हैं. ये दुर्लभ माना जाता है.ये आस्ट्रेलिया में पाया जाता है.

फल कम या ज्यादा मीठा क्यों होता है?

आपने महसूस किया होगा कि कुछ फल ज्यादा मीठे या खट्टे होते हैं जबकि कुछ कम. ऐसा फलों में मौजूद फ्रक्टोज, सेल्यूलोज, विटामिन, स्टार्च, एसिड और प्रोटीन के कारण उनमें मिठास और खट्टेपन की मात्रा अलग अलग होती है. जिन फलों शर्करा ज्यादा होती है, उनका स्वाद मीठा होता है, जिनमें अम्लों की मात्रा ज्यादा होती है, उनका स्वाद खट्टा होता है. तो कुल मिलाकर पौधों में मुख्य रूप से प्राकृतिक शर्करा (जैसे फ्रक्टोज) और अम्ल (जैसे साइट्रिक एसिड) मौजूद होते हैं. ये उसके स्वाद को निर्धारित करते हैं.

फलों में नमक डालकर खाना चाहिए या नहीं?

विज्ञान के अनुसार नमक के साथ फल खाने से स्वास्थ्य पर पॉजिटिव और निगेटिव दोनों तरह के कई प्रभाव पड़ सकते हैं. नमक डालने से कुछ फलों के स्वाद चटपटे हो जाते हैं, जिससे उन्हें खाने में ज्यादा स्वाद आता है. ये खट्टे या कच्चे फलों के लिए विशेष रूप से उपयोगी है. साइंस कहती है कि नियमित रूप से नमक के साथ फल खाने से अत्यधिक सोडियम का सेवन हो सकता है. उससे हाई सोडियम सेवन हाई ब्लड प्रेशर, हृदय रोग और स्ट्रोक का रिस्क दे सकता है. फिर फलों पर नमक छिड़कने से उनमें पानी निकल सकता है, जिससे कुछ पोषक तत्व खराब हो सकते हैं. यानि किसी फल से जितना लाभ मिल सकता है, वो नहीं मिलेगा.

नदी जोड़ो अभियान, एक सदी का सपना.

भूपेन्द्र गुप्ता

नदी जोड़ो अभियान आज चर्चा का विषय है। इसका श्रेय सभी पार्टियों लेने की कोशिश भी करती हैं लेकिन इन परियोजनाओं का इतिहास 100साल से भी अधिक पुराना है।इस इतिहास को जानकर यह समझा जा सकता है कि सपनों के फलीभूत होने में सैकड़ों साल की तपस्या शामिल होती है ।इसमें कोई एक व्यक्ति अकेला नहीं है,बल्कि सरकारों के निरंतर और सकारात्मक प्रयास हैं।हालांकि गुलाम भारत मे 1900 के दशक में एक अंग्रेज इंजीनियर आर्थर कॉटन ने भारत की नदियों को जोडने की कल्पना की थी ।उसका उद्देश्य था कि नदियों के अतिरिक्त जल से बड़ी–बड़ी नहरें बनाकर जल मार्गों की वृद्धि की जा सकती है जिससे ब्रिटिश सरकार को व्यापारिक सुविधा मिलेगी तथा दक्षिण भारत के तथा उड़ीसा के सूखे से निपटा जा सकेगा और वहां पर अतिरिक्त जल भेज कर उत्पादन में वृद्धि भी की जा सकेगी ।किंतु इसमें आने वाले खर्च को देखकर ब्रिटिश हुकूमत भी आगे नहीं बढ़ी और यह ठंडे बस्ते में चली गई।

देश आजाद हुआ और राष्ट्र निर्माण की योजनायें बननी शुरू हुईं।गरीबी संसाधनों के अभाव और तकनीशियनों की कमी से प्रथमिकताये आगे बढ़ती गईं।

आजादी के लगभग 23 साल बाद जब इंदिरा जी की सरकार में डाघ के एल राव जो कि बांध बनाने वाले इंजीनियर थे,सिंचाई मंत्री बने तब उन्होंने आर्थर काटन के इस सपने से धूल झाड़ी और इंदिरा जी के सामने रखा।कांग्रेस ने 1970 में इस योजना को नये दृष्टिकोण से जीवित किया। डा. के एल राव की सोच थी कि जो हिमालयीन नदियां हैं उनमें ग्लेशियरों के पिघलने के कारण गर्मियों में अतिरिक्त जल होता है और बाढ़ आती है जबकि प्रायद्वीपीय नदियां गर्मियों में सूख जाती हैं और उनमें बरसाती मौसम में बाढ़ आती है अतरू हिमालयीन नदियों और प्रायद्वीपीय नदियों की आपस में जोड़ दिया जाता है तो सूखे के मौसम में जल की उपलब्धता बनी रह सकती है इसे इंटर–वेसिन रिवर लिंकिंग कहा गया। इंदिरा गांधी ने 1980 में इस योजना को आगे बढ़ाने के लिए एनडीआरडी की रिपोर्ट तैयार करवाई ।इसकी वित्तीय व्यवस्था बनाने के लिए शुरुआत की गई और उन्होंने 1982 में नेशनल वाटर डेवलपमेंट अथॉरिटी का निर्माण किया यह नदी जोड़ो अभियान का पहला कदम था।इसके अंतर्गत इंटर–वेसिन नदियों को जोडने की योजनाओं पर कार्य शुरू हुआ ।कध्धययन हुए रिपोर्टें तैयार हुईं।जब 1999 में एनडीए की सरकार आई और अटल बिहारी बाजपेयी प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने इसे उलटकर योजना के पूरे स्वरूप को ही बदल दिया और इंटर–बेसिन परियोजनाओं को इंट्रा–वेसिन परियोजनाओं में बदल दिया किंतु 2003 तक यह विचार स्वरूप लेता इसके पहले ही 2002 में सुप्रीम कोर्ट में इसके विरोध में पीआईएल लग गई ।आगामी चुनाव में बाजपेयी सरकार उलट गई और 2004 में मनमोहन सिंह के नेतृत्व में यूपीए सरकार का गठन हुआ। तब इस परियोजना को फिर वास्तविक स्वरूप यानि इंटर– बेसिन योजना के रूप में जीवित किया गया तथा सरकार ने इस पर व्यापक अध्ययन करवाया।साल 2012 में जब सुप्रीम कोर्ट में यह फैसला दिया कि नदियों के इंटरलिंकिंग का फैसला नीतिगत है और इसे सरकारें ही करें ।तब इस योजना के लिए 2012 से गति प्रदान की गई विभिन्न राज्यों के जल बंटवारे के आपसी समझौते और विवादों के निपटारे, पर्यावरणीय जोखिम एवं इकोसिस्टम को पहुंचने वाले नुकसानों के अध्ययन करते–करते और सुलझाते–सुलझाते 2021 में केन बेतवा योजना को कैबिनेट की स्वीकृति मिली जिसका भूमि पूजन वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया है। इंटर बेसिन नदी जोड़ो परियोजना मूलत आर्थर कॉटन का सपना था जिसे डॉक्टर केएल राव ने आगे बढ़ाया और इंदिरा गांधी की सरकार ने इसे संस्थागत स्वरूप प्रदान कर राष्ट्रीय जल विकास अथॉरिटी का निर्माण किया और इस अथॉरिटी ने ही इस कल्पना को जमीन पर उतारने की शुरुआत की ।संसाधन जुटाये, अध्ययन करवाया और यह योजना लगभग 54 साल बाद अब आकार ले रही है ।

आज देश में विकास को एक निरंतर अवधारणा के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता है। इसका श्रेय अकेली एनडीए सरकार को देना आर्थर कॉटन के सपने के साथ भी धोखा होगा और डा. के एल राव तथा इंदिरा गांधी की संकल्पना के साथ भी बेईमानी होगी । विकास की योजनाओं की निरंतरता के लिए जिन–जिन लोगों ने काम किया है सभी सरकारों को श्रेय दें इसमें इंदिरा गांधी, अटल बिहारी वाजपेई, मनमोहन सिंह एवं नरेंद्र मोदी सभी शामिल हैं ।सपनों के जमीन पर उतरने की यही सच्चाई है।

विज्ञान अंधकार से प्रकाश के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता हैः स्वप्निल श्रीवास्तव

प्रयागराज। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी और यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज के द्वारा संयुक्त रूप से ष्भारतीय ज्ञान परम्परारू विज्ञान, गणित एवं समाजष विषय पर त्रिदिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ 25 फरवरी 2025 को आयोजन कुम्भ क्षेत्र में किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में डॉ स्वप्निल श्रीवास्तव ने भारतीय जीवन दर्शन और विज्ञान विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि भारतीय दर्शन, ज्ञान और विज्ञान हमें ष्असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतम् गमय।।ष के रास्ते पर चलने की दृष्टि प्रदान करता है। किसी विचार को गहराई से समझने के लिए तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। आज के समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी को साथ – साथ देखने पर स्थिति कही ज्यादा स्पष्ट होती है, हमारी समझ बेहतर होने की प्रक्रिया में संलग्न होती है। भारतीय एवं आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी को उनके सही संदर्भ में समझने के लिए उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए। जहां तक प्रौद्योगिकी की बात है भारतीय सभ्यता में छोटी प्रौद्योगिकी, छोटे कारखानों का महत्व रहा है, वहीं आधुनिक सभ्यता में बड़ी प्रौद्योगिकी, बड़े कारखाने महत्वपूर्ण रहे हैं। भारत में ज्ञान– विज्ञान की दृष्टि, प्रयोग और क्रियान्वयन समाज के लिए थे। आधुनिक विज्ञान की दया से आज साधनों की गति तेज हो गई है। घंटों का काम मिनटों में और कभी कभी तो सेकेंडों में होने लगा है। साधन जब इतने तेज हो गए तो लोगों के पास अपना सामाजिक जीवन जीने के लिए, आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए, सृजनात्मक कार्य करने के लिए बहुत ज्यादा समय बचना

चाहिए परन्तु हकीकत इसे परे है। आज हमारे पास भोजन करने के लिए भी समय नहीं है। चारों ओर दिखाई पड़ रहा फास्टफूड कल्चर हम सभी के सामने है । समाज में आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से पड़ते सूक्ष्म प्रभावों को हमें समझना होगा। प्रौद्योगिकी के सभ्यतागत प्रभाव को समझकर ष्भारतीयता और आधुनिकताष का अन्तर आसानी से समझा जा सकता है। यह समझने की जरूरत है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी मनुष्य के लिए हैं या फिर मनुष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए है। दूसरे सत्र में यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज के गणित के सहायक आचार्य राम जी पाण्डेय ने वैदिक गणित और उसके अनुप्रयोगों को लेकर रोचक व्याख्यान दिया। उन्होंने उदाहरणों द्वारा जटिल अंकगणितीय गणनाओं का अत्यंत सरल, सहज एवं त्वरित समाधान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अन्त में। राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के कार्यकारी सचिव डॉ संतोष कुमार शुक्ल ने वक्ताओं को स्मृति चिह्न प्रदान कर धन्यवाद देते हुए कहा कि इस भीड़ में भी वक्ताओं और साथ ही साथ श्रोताओं का आगमन सुखद है। उनका आना ही यह बताता है कि आज समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता बढ़ी है। भीड़ और प्रशासन द्वारा क्षेत्र को ष्छव टमीपबसमर्‍वदमष घोषित करने के कारण आगामी दोनों दिनों की कार्यशाला ऑनलाइन की जाएगी।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से स्वच्छ महाकुंभ स्वच्छ प्रयागराज का संदेश

प्रयागराज। नगर निगम द्वारा इस महाकुंभ को दिव्यता भव्यता के साथ साथ स्वच्छता के महाकुंभ के रूप में पहचान दिलाने के उद्देश्य और

श्रद्धालुओं को जागरूक करने हेतु नुक्कड़ नाटक माध्यमों को एक अभियान के रूप में आयोजित किया। इन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से स्वच्छ महाकुंभ, प्लास्टिक मुक्त वातावरण, हरित पहल, जल संरक्षण, स्वच्छ शौचालय, घाटों और तीर्थ स्थलों की स्वच्छता, ऐतिहासिक धरोहरों की देखभाल, और रचनात्मक पुनर्चक्रण (कबाड़ से जुगाड़) और सफाई मित्रों के सम्मान जैसे विषयों पर संदेश दिया गया। सहायक नगर आयुक्त दीपशिखा पांडे ने बताया कि 01 जनवरी 2025 से शुरुआत हुए इन नुक्कड़ नाटकों की अब तक 250 से अधिक जगहों पर मंचन किया जा चुका है ये मंचन अभी 05 मार्च तक चलेंगे। जिसके माध्यम से नगर निगम प्रयागराज के नवाचारों और स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। शौचालय, रैन बसेरे, पानी के पीने के व्यवस्था इत्यादि के बारे में बताना होता था तो ये नुक्कड़ नाटक के कलाकारों द्वारा अपने विशेष अंदाज में श्रद्धालुओं को जागरूक करते थे।

महाकुंभ में आए श्रद्धालु की सेवा सौभाग्य की बात– महापौर

प्रयागराज। महापौर उमेश चंद्र गणेश केसरवानी ने कीडगंज, मुट्ठीगंज

चौक, लोकनाथ जॉनसेन गंज, बताशा मंडी सिविल लाइंस, खुल्दाबाद व अन्य जगहों पर अनवरत चल रहे भंडारे में पहुंचे इस दौरान उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रसाद का वितरण किया। उन्होंने कहा कि शहर में प्रतिदिन श्रद्धालुओं के आगमन के दौरान अनवरत भंडारा प्रयाग की जनता जनार्दन द्वारा चलाया जा रहा है। इसके लिए मैं जनता जनार्दन व व्यापारी भाइयों का ऋणी हूं। ये बड़ा ही सौभाग्य है कि प्रयागराज की जनता जनार्दन व व्यापारी भाई प्रयागराज आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा कार्य में लगे हुए हैं। उन्होंने कहा कि इसके लिए देश और दुनिया भर से आए श्रद्धालु आपका दिया सम्मान कभी नहीं भूलेंगे।

समस्त संसार अद्दश्य ऊर्जा से समाहित हैं: मानव आकाश

प्रयागराज। त्रिवेणी रोड पर संस्कृत एवं सूचना पंडाल प्रदर्शनी हाल में आयोजित प्रेस वार्ता कार्यक्रम में मानव आकाश द्वारा सनातन विज्ञान के द्वारा वैश्विक समस्या का निदान से अवगत कराया जिसमें वर्ल्ड सनातन रिसर्च एवं अवेयरनेस फार्म के संस्थापक व राष्ट्रीय महासचिव मोक्षयामी फाउंडेशन मानव आकाश एवं सह संस्थापक व राष्ट्रीय योगा प्रभारी नंदकिशोर मौजूद रहे। आज संपूर्ण विश्व में जो भी समस्या है उसका एकमात्र समाधान अध्यात्म में ही निहित है। चाहे समस्या व्यक्तिगत हो सामाजिक हो राष्ट्रीय हो या फिर अंतरराष्ट्रीय हो, वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व में धर्म, जाति,

भाषा, रंग ,देश और प्रांत के कारण लोग लड़ रहे हैं परंतु समाधान केवल अध्यात्म में ही है। वास्तव में यह समस्त संसार अदृश्य ऊर्जा के द्वारा संचालित है, जिस प्रकार से भौतिक विज्ञान 108 ज्ञात एवं 10 अज्ञात तत्व द्वारा संचालित हैं उसी प्रकार यह विश्व 108 गुण, शक्ति ,कला तथा 10 अवगुण के द्वारा संचालित है। ऊर्जा में होते परिवर्तन से ही समाज में सकारात्मक या नकारात्मक परिवर्तन हो रहा है। यदि हम ऊर्जा के इस खेल को समझ जाएं और उसे अपनी इच्छा के अनुसार नियंत्रित कर पाए तो विश्व पटल पर जितनी भी समस्याएं हैं उसका समाधान हो जाएगा। उदाहरण के तौर पर रसिया यूक्रेन युद्ध, इसराइल हमास के अलावा समाज में बढ़ते अपराधिक गतिविधि या किसी भी प्रकार की समस्या हो। यदि हम विश्व के सभी समस्या का समाधान चाहते हैं तो हमें ऊर्जा के खेल को समझना होगा और ऊर्जा के खेल को समझने के लिए कुछ प्रश्नों को प्रत्येक व्यक्ति को अवगत कराना होगा। आप कौन हैं। आप कहां से आए हैं। आपका इस जगत में आने का उद्देश्य क्या है। आपका विधाता कौन है। आपका विधाता से क्या संबंध है। आपको विधाता से क्या प्राप्त होता है। आपका सबसे बड़ा शत्रु कौन है। मानव जाति में जन्म लेने के कारण आपका परम कर्तव्य क्या है। या दूसरा मार्ग हमारे पास यह है कि विश्व भर के विद्वान तीन पहेली को सुलझा कर उस परम ज्ञान को लोगों तक पहुंचाएं। भागवत गीता में वर्णित एक वृक्ष जिसे जानने के बाद और कुछ शेष नहीं रह जाता। कुरान में वर्णित सूर्य उदय से लेकर सूर्यास्त तक पहुंचने वाले लोगों का रहस्य। बाइबल में वर्णित नबूकत नेशर के स्वप्न में दिखी मूर्ति का यथार्थ रहस्य। प्रदेश मानवाधिकार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद कुमार सिंह, प्रदेश मानवाधिकार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेंद्र प्रताप सिंह, प्रदेश मानवाधिकार के छत्तीसगढ़ प्रदेश अध्यक्ष डॉ युगल किशोर, पत्रकार सौरभ सिंह सोमवंशी, जितेंद्र शुक्ला, नागेंद्र शुक्ला मौजूद रहे।

भाजपा महानगर अध्यक्ष राजेंद्र मिश्रा आजाद पार्क के सामने भाजपा सेवा शिविर के माध्यम से भंडारे प्रसाद का वितरण किया।

महाकुंभ में डेढ़ माह चले निःशुल्क चिकित्सा शिविर का समापन

महाकुंभ नगर। हेल्पिंग हैंड् चौरिटेबल सोसायटी द्वारा माघ मेले में

डेढ़ माह तक चलाए गए। निशुल्क चिकित्सा शिविर एवम जागरूकता अभियान जिसमे एड्स, मुख का कैंसर तथा नशा उन्मूलन के प्रति जागरूकता अभियान का समापन आज मेला क्षेत्र में हुआ। यह कैंप 12 जनवरी से 24 फरवरी तक चला। कैंप इंचार्ज विजय कुशवाहा ने बताया कि डेढ़ माह तक सेक्टर 12,हेतापट्टी कुट्टी मार्ग पर चले इस शिविर में एलोपैथिक–होम्योपैथिक चिकित्सको ने लगभग 10500 मरीजों को चिकित्सकीय सेवा प्रदान की साथ ही निःशुल्क दवा भी दिया। विजय कुशवाहा ने यह भी बताया कि संस्था के सदस्यों ने छोटी छोटी टीम बना कर मेला क्षेत्र मे लोगों को शराब एवं तंबाकू के दुष्परिणाम और उससे होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी दी।साथ ही काफी लोगों से ये संकल्प भी कराया की वे गुटका शराब और सिग्रेट अब नहीं लेंगे।

सनातन को पूरे विश्व में मिली नई पहचान – जगतारमुनि

प्रयागराज। महाशिवरात्रि पर धर्मगुरु त्रिशूल भगवान की अड़तीसवी दर्शन शोभा यात्रा के अवसर पर श्रीपंचायती अखाड़ा नया उदासीन निर्वाण

में आयोजित भजन संगीत कार्यक्रम में बोलते हुए अखाड़ा के सचिव श्रीमहंत जगतारमुनि ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में कहा कि यह शासन सत्ता में परिवर्तन का ही परिणाम है कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के अथक प्रयास का फल है की संपूर्ण विश्व में सनातन धर्म संस्कृति और मान्यताओं को पहचान मिली। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वह निर्मल गंगा को प्रदूषित कहने वाले स्वयं सनातन धर्म और पवित्र गंगा माता के विरोधी है। पूज्य महाराज जी ने कहा कि जय शिवसेना भारत संगठन के लोग भक्ति व शक्ति के साथ एकजुट होकर धर्मगुरु त्रिशूल भगवान के आशीर्वाद से सनातन हिंदू धर्म को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। जय शिवसेना भारत के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओंकारनाथ त्रिपाठी ने सेना के उदघोष की व्याख्या करते हुए कहा कि राष्ट्रीय धर्म का सम्मान तभी सुरक्षित है हिंदुस्तान। आज सनातन धर्म भारत देश व हिंदू जनता अनाथ वह उपेक्षिक नहीं रह गई।

उत्तर मध्य रेलवे

टेण्डर संख्या-230-वि0/कवि0/प्रयागराज/ई टेण्डर/2025/549 दिनांक: 24.02.2025

ई-निविदा सूचना

वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियन्ता/कवि0/उ0म0रे0/प्रयागराज, द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्न कार्य हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। जिनका विवरण निम्न प्रकार है:-

निविदा सं0: 230-कवि0-कार्य ठेका-940-2025

कार्य का विवरण: प्रयागराज मंडल के पंडित दीन दयाल उपाध्याय-प्रयागराज खंड में बीएच-के पर एनएच के छह लेनिंग के संबंध में आरओबी के निर्माण और प्रयागराज छिवकी-मानिकपुर खंड में एलसी-424 जसरा पर आरओबी और आरयूबी का निर्माण के कारण 25 केवी ओएचई में संशोधन।

अनुमानित लागत : रु. 15145675.84	बिड सुरक्षा राशि : रु. 225700.00
कार्य अवधि : 09 महीना	बोली प्रणाली : एक पैकेट

निविदा बन्द होने की तिथि तथा समय: 18.03.2025, 14:00 बजे

निविदा खुलने की तिथि तथा समय: 18.03.2025, 15:00 बजे

एलोकेशन: डिपॉजिट वर्क्स (00844581)	यूडब्लूआईडी नं0: -

नोट: 1. उपरोक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण (निविदा प्रपत्र सहित) वेबसाइट www.ireps.gov.in पर निविदा खोलने की तिथि से 21 दिन पहले से उपलब्ध होगा। 2. उपरोक्त निविदा में ई-बिड के अलावा किसी अन्य रूप में बिड स्वीकार नहीं की जायेगी। इस प्रयोजन हेतु वेन्डरों को चाहिए कि वे अपने आपको डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र के साथ IREPS की वेबसाइट पर पंजीकृत करायें। 3. किसी भी प्रकार की तकनीकी समस्या के समाधान के लिए IREPS की वेबसाइट की हेल्प लाइन से सम्पर्क किया जा सकता है। 371/25 (ADM)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

महाकुंभः भीड़ नियंत्रण में एसीसी कैडेट्स ने अहम योगदान दिया।

प्रयागराज। 13 जनवरी से 26 फरवरी तक महाकुंभ–25 के सफल आयोजन में एनसीसी ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज एवं इसके अधीनस्थ 12 यूनिटों ने अहम योगदान दिया, जिसमें 11 अधिकारी, 52 जवान एवं 1100 एनसीसी कैडेट्स सक्रिय रूप से सहभागी थे। महाकुंभ–25 के आयोजन में एनसीसी की सिविल प्रशासन के साथ सहभागिता की रूपरेखा माह जून 2024 में ब्रिगेडियर यूएस कांदिल, ग्रुप कमांडर एनसीसी ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज एवं मेलाधिकारी विजय किरन आनन्द के बीच पारस्परिक संवाद करके तैयार की गई थी। जिसके उपरांत एनसीसी महानिदेशक नई दिल्ली एवं एनसीसी उपमहानिदेशक उत्तरप्रदेश लखनऊ की स्वीकृति के बाद एनसीसी ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज द्वारा महाकुंभ क्षेत्र में एनसीसी शिविर का गठन किया गया।महाकुंभ–25 को सफल बनाने के उद्देश्य से एनसीसी ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज द्वारा समयबद्धतानुसार चार शिविरों का आयोजन किया गया। महाकुंभ क्षेत्र में एनसीसी शिविर का आयोजन शुरू होने से पूर्व आपदा प्रबंधन द्वारा 850 कैडेटों को किसी भी आपदा से निपटने हेतु कुशल प्रशिक्षण कराया गया। समाज कल्याण मंत्रालय द्वारा आयोजित रिसेटलमेंट कार्यक्रम में जागरूकता बढ़ाने हेतु एनसीसी कैडेटों द्वारा नुक्कड़ नाटक आयोजित किए गए। एनसीसी ग्रुप मुख्यालय प्रयागराज द्वारा आयोजित प्रत्येक शिविरों में 275 कैडेटों ने भाग लिया। महाकुंभ में एनसीसी कैडेटों ने श्रद्धालुओं के आवागमन को नियंत्रण करने के साथ उन्हें संगम स्नान हेतु सही मार्गदर्शन में अहम भूमिका निभाई। महाकुंभ में आपदा प्रबंधन एवं आपातकालीन योजना के लिए संकल्पबद्ध एनसीसी कैडेटों द्वारा महाकुंभ के दौरान जो श्रद्धालु अपनों से बिछड़ गए थे उनका सहयोग करते हुए उनके परिजनों से मिलाने का भी सराहनीय कार्य किया। नारकोटिक्स ब्यूरो ऑफ इंडिया टीम के साथ मिलकर एनसीसी कैडेटों द्वारा नशे की लत में लिप्त नागरिकों में जागरूकता हेतु सहयोग किया गया।

उत्तर मध्य रेलवे

निविदा सूचना सं.: 14320242025 दिनांक : 21.02.2025

ई-टेण्डरिंग निविदा सूचना

मण्डल रेल प्रबन्धक / इंजीनियरिंग / उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिये एवं उनकी ओर से निम्नलिखित निर्धारित कार्यो के लिये ई-निविदाएँ निर्धारित प्रपत्र पर दिनांक 17.03.2025 को 13:30 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है :-

क्र.सं.: 01 निविदा नं.: 281, कार्यों का विवरण: चुनार-चोपन:- बेहतर ढलान स्थिरता के लिए गहरे कटान स्थानों से अतिरिक्त भार सामग्री (मिट्टी/पत्थर) को हटाने का कार्य I, कार्य समापन की अवधि: 06 माह

अनुमानित मूल्य (रू.): 3,71,72,942.15	बयाने की रकम (रू.): 3,35,900.00

सिमिलर वर्क के लिये न्यूनतम वांछनीय आधार: ऐनी ब्रिज कंसट्रक्शन/रिबिल्डिंग/रिपेयर वर्क्स

निविदा खुलने की तिथि: 17.03.2025, नोट: 1. आनलाइन निविदा खुलने की तिथि को 13:30 बजे तक प्रस्तुत की जा सकती है। 2. उपर्युक्त ई-निविदा का पूर्ण विवरण निविदा प्रपत्र सहित वेबसाइट www.ireps.gov.in. पर समय 13:30 बजे तक निविदा खुलने की निर्धारित तिथि तक उपलब्ध है। 362/25 (D)

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR

मंदिर पर विशेष आवरण एवं विरुपण का विमोचन

प्रयागराज। महाकुंभ 2025 के अंतिम दिन,शिवरात्रि के अवसर पर नागवासुकि मंदिर परिसर में नागवासुकि मंदिर पर विशेष आवरण एवं विरुपण का विमोचन नागवासुकि मंदिर के मुख्य पुजारी एवं प्रबंधक श्यामधर त्रिपाठी द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथी श्यामधर त्रिपाठी ने नागवासुकि मंदिर के गौरवमयी इतिहास एवं महत्ता पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर विशिष्ट अतिथी के रूप में प्रसिद्ध क्रिकेट कोच देवेश मिश्रा ,पोस्टमास्टर जनरल प्रयागराज राजीव उमराव,निदेशक डाक सेवाएं प्रयागराज।

सम्पादक
सिद्धनाथ द्विवेदी
प्रबन्धक निदेशक
दीपक जयसवाल
सम्पादकीय कार्यालय
11ई/2, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के आधीन होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक सिद्धनाथ द्विवेदी द्वारा काम्पीटेंट बिजनेस सर्विसेज विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित एवं 399 कृष्णानगर कीडगंज से प्रकाशित।
सम्पादक–सिद्धनाथ द्विवेदी, आरएनआई नं. UPHIN/2007/22706 रजि.नं. AD-32/2008-09 ईमेलः amritkt.alld@gmail.com फोन नं. : 9453273951, 8799627062

॥ सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ॥

दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

66 करोड़+ श्रद्धालुओं का पुण्य स्नान

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज को श्रम साधना से सफल बनाने वाले कर्मयोगियों का हृदय से आभार

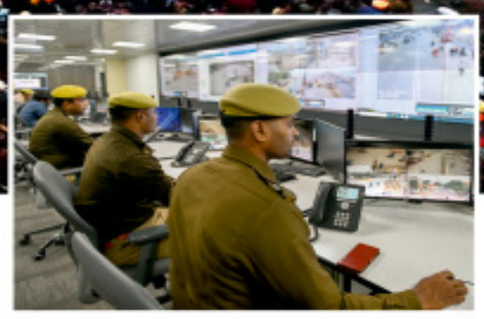

गंगा पूजन

समय : पूर्वाह्न 11:00 बजे

— एवं —

स्वच्छताकर्मियों एवं स्वास्थ्यकर्मियों का सम्मान
स्वच्छ कुम्भकोष व आयुष्मान योजना का अच्छादन प्रमाण पत्र वितरण

समय : पूर्वाह्न 11:40 बजे

नाविकों एवं परिवहन विभाग के चालकों एवं परिचालकों से संवाद
समय : अपराह्न 1:20 बजे

पुलिस जवानों के साथ संवाद
समय : सायं 5:30 बजे

प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों से संवाद
समय : सायं 6:30 बजे

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश द्वारा

गरिमामयी उपस्थिति

केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सुरेश कुमार खन्ना
मंत्री, वित्त एवं संसदीय कार्य उत्तर प्रदेश

स्वतंत्र देव सिंह
मंत्री, जल शक्ति तथा बाढ़ नियंत्रण उत्तर प्रदेश

नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
मंत्री, औद्योगिक विकास, निर्यात प्रोत्साहन, एन.आर.आई. तथा निवेश प्रोत्साहन, उत्तर प्रदेश

अनिल राजभर
मंत्री, श्रम एवं सेवायोजन तथा समन्वय, उत्तर प्रदेश

ए. के. शर्मा
मंत्री, नगर विकास, शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत, उत्तर प्रदेश

दयाशंकर सिंह
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) परिवहन, उत्तर प्रदेश

रामकेश निषाद
राज्य मंत्री जल शक्ति, उत्तर प्रदेश

प्रवीण पटेल
सांसद, फूलपुर

डॉ. वी. के. सिंह
अध्यक्ष, जिला पंचायत, प्रयागराज

उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी
महापौर, प्रयागराज

हर्षवर्धन वाजपेयी
विधायक, प्रयागराज उत्तर

डॉ. सिद्धार्थ नाथ सिंह
विधायक, प्रयागराज पश्चिम

वाचस्पति
विधायक, बारा

राजमणि कोल
विधायक, कोरांव

पीयूष रंजन निषाद
विधायक, करछना

गुरु प्रसाद मौर्य
विधायक, फाफामऊ

दीपक पटेल
विधायक, फूलपुर

सुरेन्द्र चौधरी
सदस्य, विधान परिषद

डॉ. के. पी. श्रीवास्तव
सदस्य, विधान परिषद

डॉ. बाबूलाल तिवारी
सदस्य, विधान परिषद

एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

दिनांक : 27 फरवरी, 2025 | स्थान : महाकुम्भ मेला क्षेत्र, महाकुम्भनगर (प्रयागराज)

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

लाइव प्रसारण DD NEWS व Youtube.com/DDNEWS Youtube.com/dduttarpradesh एवं UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP